Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 4

विचारक, विश्वास और इमारतें

सांस्कृतिक विकास (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 2

प्रीतेश जोशी

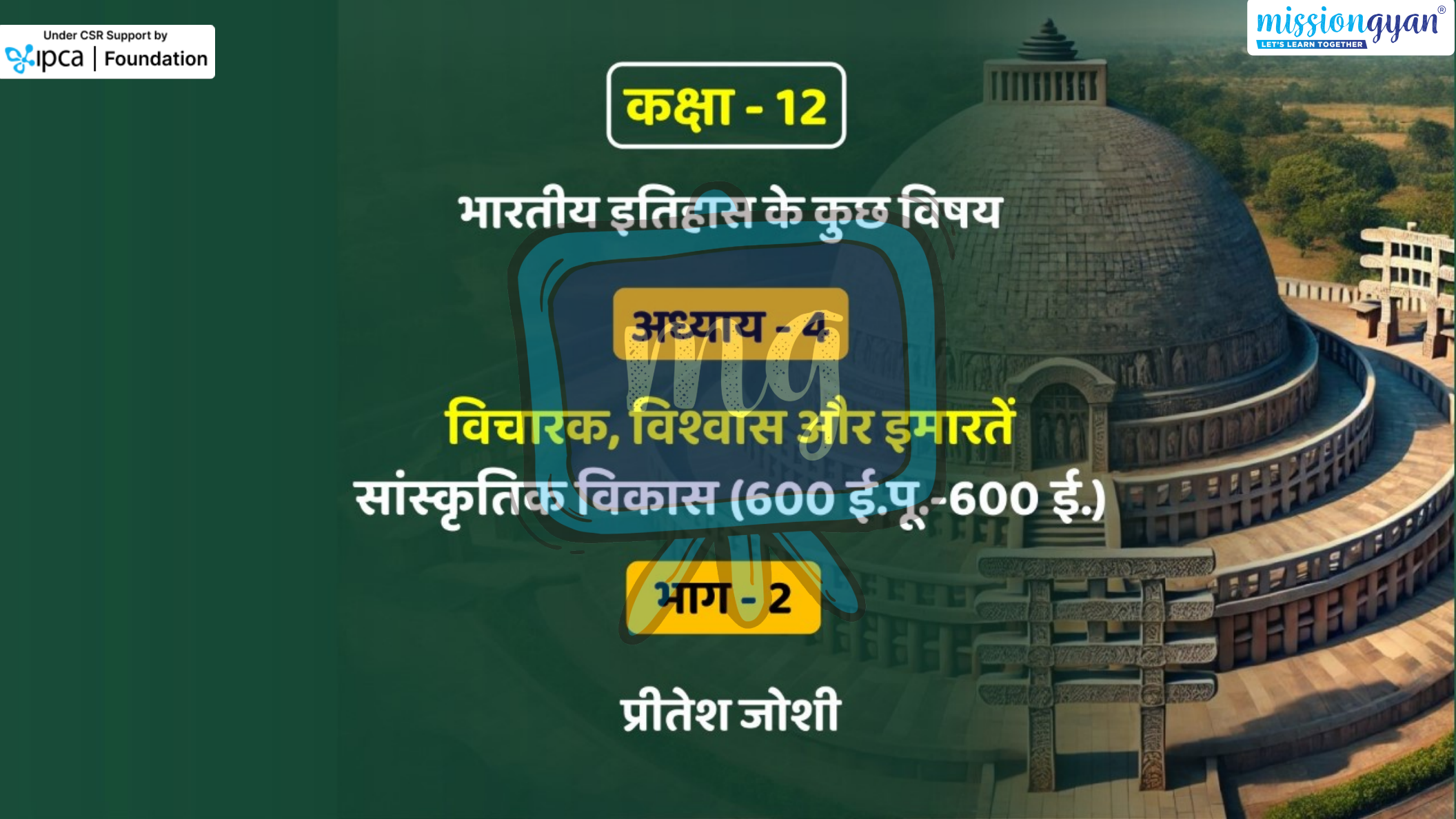

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

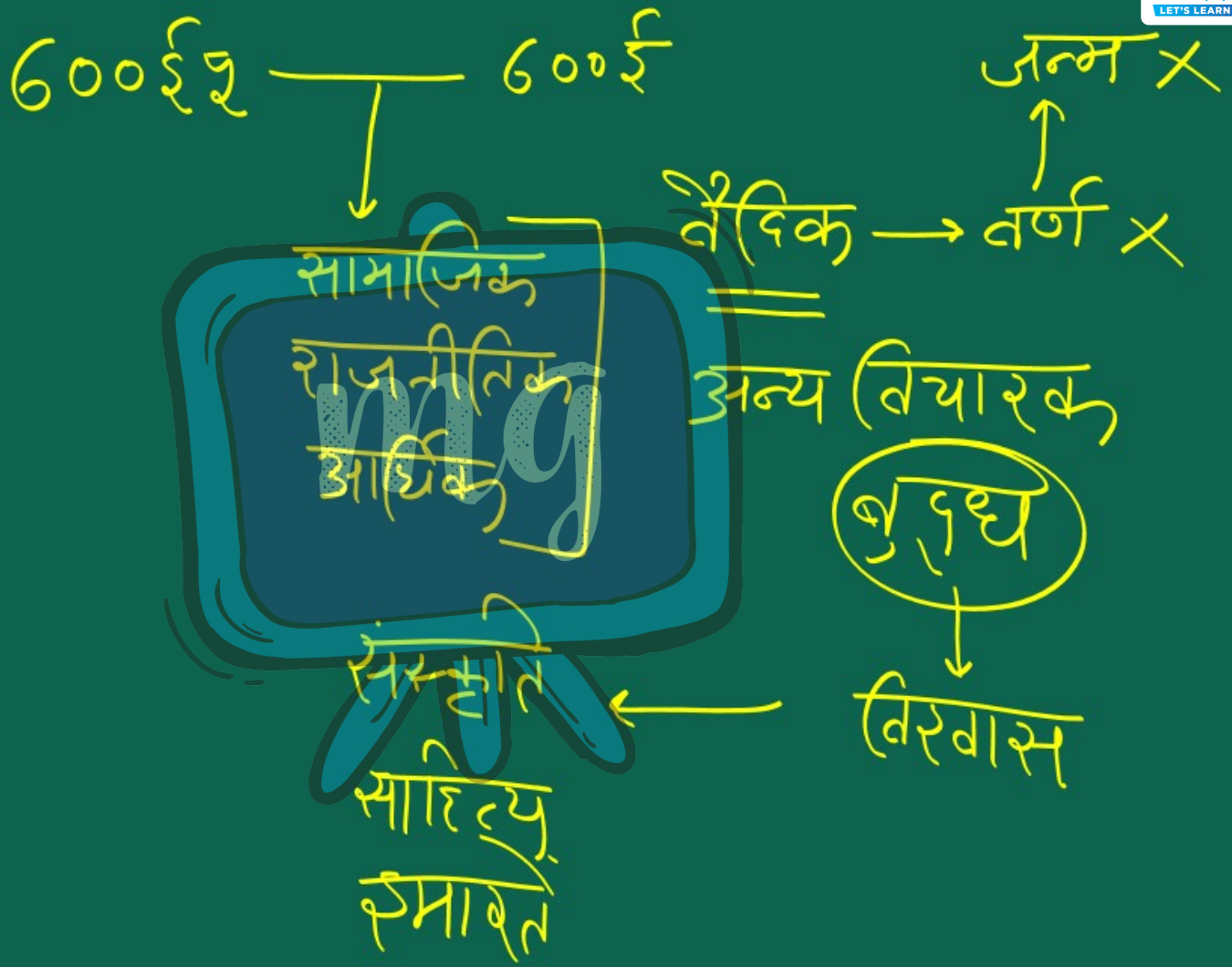

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

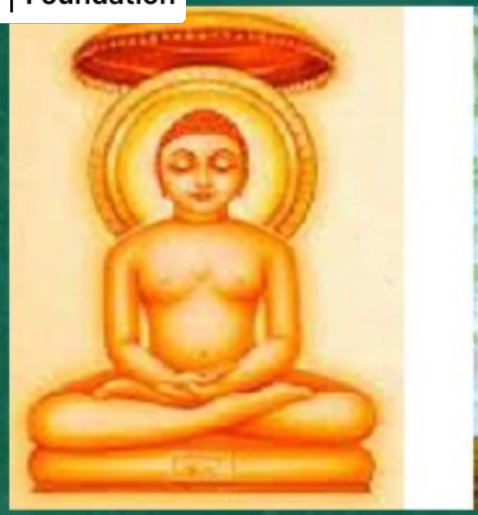



वाद-विवाद और चर्चाएं

- समकालीन बौद्ध ग्रंथों में 64 संप्रदायों या (चिंतन परंपराओं) का उल्लेख मिलता है।
- इसमें हमें जीवंत चर्चाओं और विवादों की एक झांकी मिलती है।
- शिक्षक एक जगह से दूसरी जगह घूम-घूम कर अपने दर्शन तथा विश्व के विषय में अपनी समझ को लेकर एक दूसरे से तथा सामान्य लोगों से तर्क-वितर्क करते थे।
- ये चर्चाएं कुटागारशालाओं (नुकीली छत वाली झोंपडी) या ऐसे उपवनों में होती थी जहां घुमक्कड़ मनीषी ठहरा करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

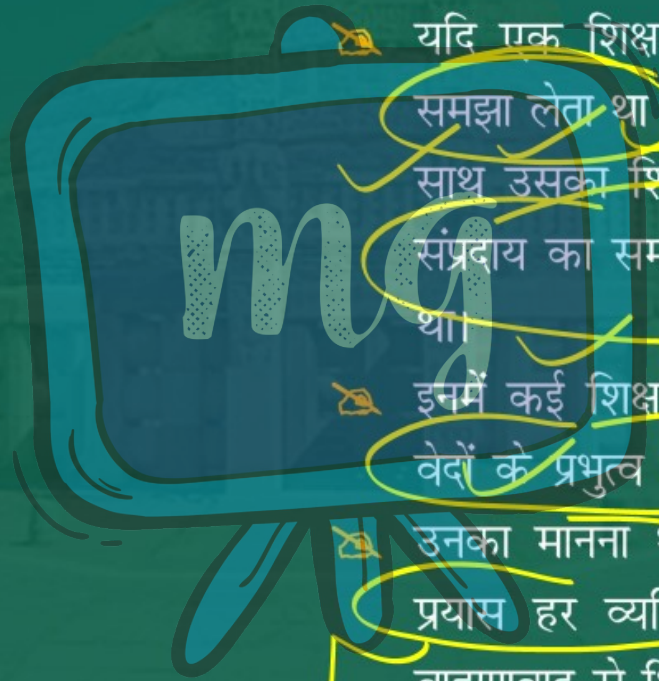

- यदि एक शिक्षक अपने प्रतिद्वन्दी को अपने तर्कों से समझा लेता था तो वह (प्रतिद्वंदी) अपने अनुयायियों के साथ उसका शिष्य बन जाता था। इसलिए किसी भी संप्रदाय का समर्थन समय के साथ घटता बढ़ता रहता था।
- इनमें कई शिक्षक महावीर स्वामी तथा महात्मा बुद्ध, वेदों के प्रभुत्व पर प्रश्न उठाते थे।
- उनका मानना था कि जीवन के दुखों से मुक्ति का प्रयास हर व्यक्ति स्वयं कर सकता था। यह बात ब्राह्मणवाद से भिन्न थी क्योंकि ब्राह्मणवाद के अनुसार किसी व्यक्ति का अस्तित्व उसकी जाति और लिंग से निर्धारित होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बौद्ध ग्रंथ किस प्रकार तैयार और संरक्षित किये जाते थे



- बुद्ध (अन्य शिक्षकों की तरह) चर्चा और बातचीत करते हुए मौखिक शिक्षा देते थे।
- महिलाएं और पुरूष (शायद बच्चे भी) इन प्रवचनों को सुनते थे और इन पर चर्चा करते थे।
- बुद्ध के किसी भी संभाषण को उनके जीवन काल में लिखा नहीं गया।
- उनकी मृत्यु के बाद (500–400 ई.पू.) उनके शिष्यों ने 'ज्येष्ठों' या 'वरिष्ठ श्रमणों' की एक सभा वेसली (बिहार स्थित बैशाली का पालि भाषा में) में बुलाई। जहां उनकी शिक्षाओं का संकलन किया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मौखिक

लिखित

- इन संग्रहों को 'त्रिपिटक' (भिन्न प्रकार के ग्रंथों को रखने के लिए 3 टोकरियां' कहा जाता था।
- पहले उन्हें मौखिक रूप से ही संप्रेषित किया जाता था। बाद में उन्हें लिखकर विषय और लम्बाई के अनुसार वर्गीकरण किया गया।
- विनय पिटक :- संघ या बौद्ध मठों में रहने वाले लोगों के लिए नियमों का संग्रह था।
- सुत्त - पिटक :- बुद्ध की शिक्षाएं इसमें रखीं गयी।
- अभिधम्म पिटक :- इसमें दर्शन से जुड़े विषय आये।
- हर पिटक के अंदर कई ग्रंथ होते थे, बाद में बौद्ध विद्वानों ने इन ग्रंथों पर टीकाऐं लिखीं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- जब बौद्ध धर्म श्रीलंका जैसे नये इलाकों में फैला तो
  (i) दीपवंश (द्वीप का इतिहास)
  (ii) महावंश (महान इतिहास)
  जैसे क्षेत्र-विशेष के बौद्ध इतिहास को लिखा गया। इनमें से कई रचनाओं में बुद्ध की जीवनी लिखी गई है। ज्यादातर पुराने ग्रंथ पालि में है। बाद के युगों में संस्कृत में लिखे गये।
- जब बौद्ध ग्रंथ पूर्व एशिया में फैला तो फा-शिएन तथा श्वैन त्सांग जैसे तीर्थयात्री बौद्ध धर्म की खोज में भारत आये। ये पुस्तकें वे अपने देश ले गऐ जहां विद्वानों ने इनका अनुवाद किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

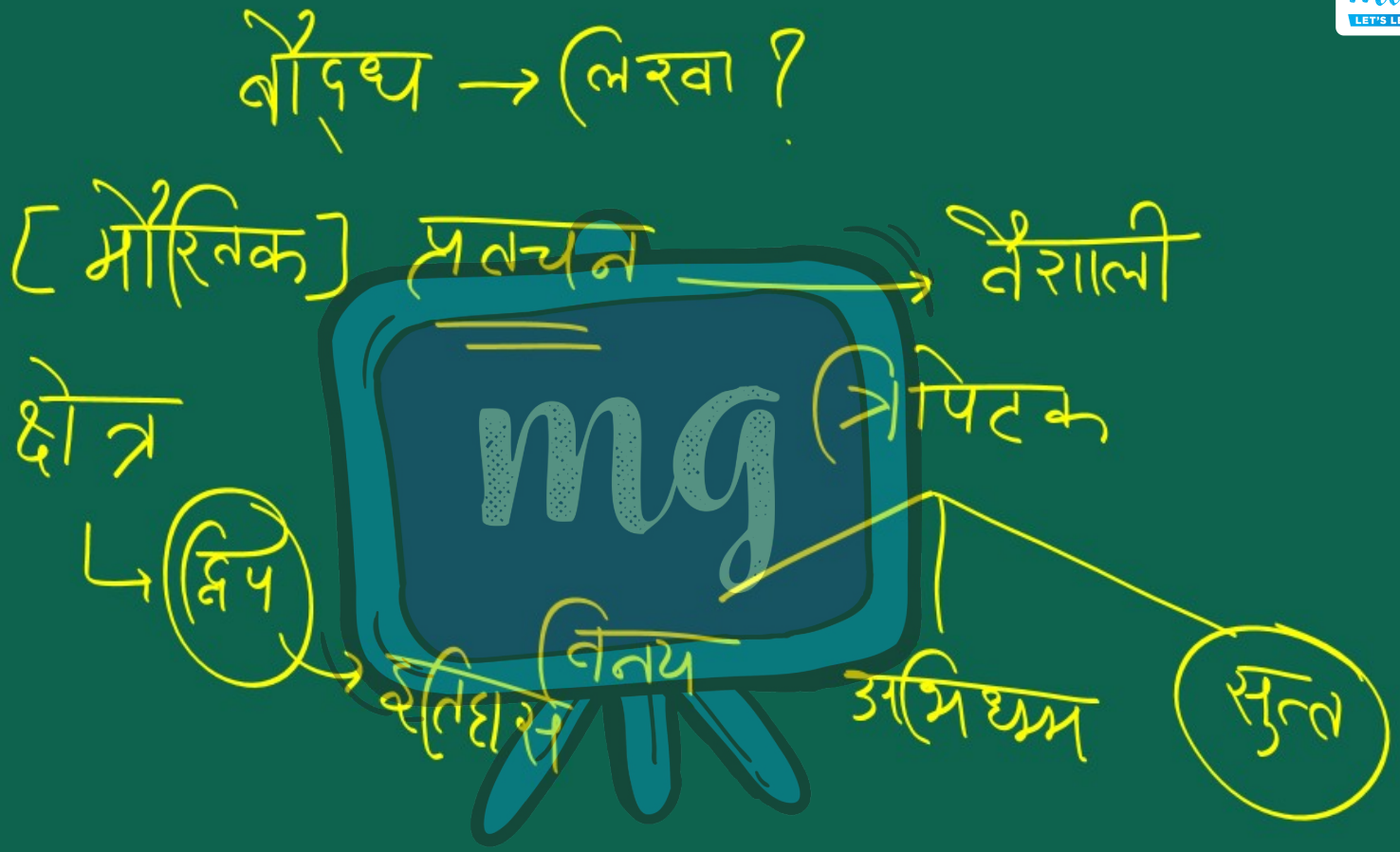

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- हिन्दुस्तान के बौद्ध शिक्षक भी दूर-दराज के देशों में गये। बुद्ध की शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए वे कई पुस्तकें अपने साथ ले गये।
- कई सदियों तक ये पांडुलिपियां एशिया के भिन्न भिन्न इलाकों में स्थित बौद्ध विहारों में संरक्षित थी।
- पालि, संस्कृत, चीनी और तिब्बती भाषाओं में लिखे गये इन ग्रंथों से आधुनिक अनुवाद तैयार किये गये हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पालि → संस्कृत ★



संस्कृत में लिखी हुई एक बौद्ध पांडुलिपि, लगभग 12वीं शताब्दी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

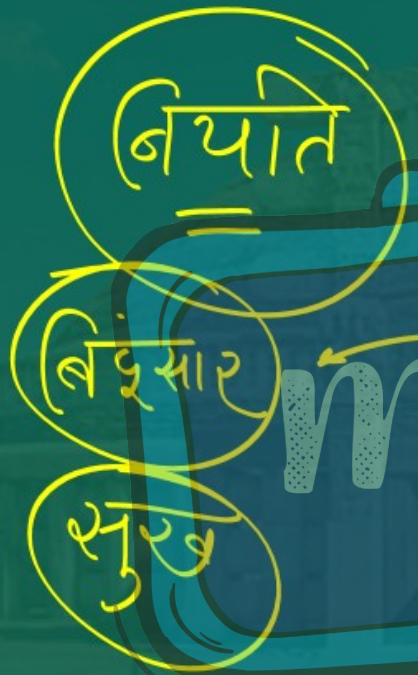

नियतिवादी और भौतिकवादी

नियतिवादी – ऐसे लोग जो यह विश्वास करते हैं कि सब कुछ पूर्व निर्धारित है। यह 'आजीविका परंपरा' के लोग कहलाते है। मक्खलि गोसाल इस परंपरा के शिक्षक थे।

भौतिकवादी – भौतिक वस्तुओं से सुख प्राप्त करने की विचारधारा वाले लोग जो देह या शरीर को ही आत्मा मानते हैं। यह 'लोकायत परंपरा' के लोग कहलाते थे।

अजीत केसकंबलिन इस परंपरा के शिक्षक थे।

इन दार्शनिक परंपराओं के ग्रंथ नष्ट हो गये। इसलिए हमें अन्य परंपराओं से ही इनके बारे में जानकारी मिलती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

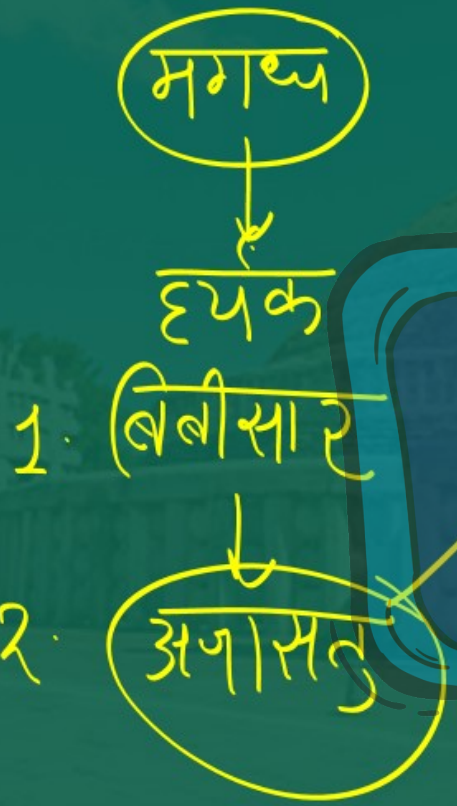

यहां सुत्तपिटक से लिया गया दृष्टांत है। इसमें मगध का राजा अजातसतु तथा बुद्ध के बीच बातचीत का वर्णन किया गया है।

एक बार राजा अजातसतु बुद्ध के पास गए और उन्होंने मक्खलि गोसाल नामक एक अन्य शिक्षक की बातें बताईं :

"हालांकि बुद्धिमान लोग यह विश्वास करते हैं कि इस सद्गुण से..... इस तपस्या से मैं कर्म प्राप्ति करूंगा..... मूर्ख उन्हीं कार्यों को करके धीरे-धीरे कर्म मुक्ति की उम्मीद करेगा।

दोनों में से कोई कुछ नहीं कर सकता। सुख और दुख मानो पूर्व निर्धारित मात्रा में माप कर दिए गए हैं। इसे संसार में बदला नहीं जा सकता।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

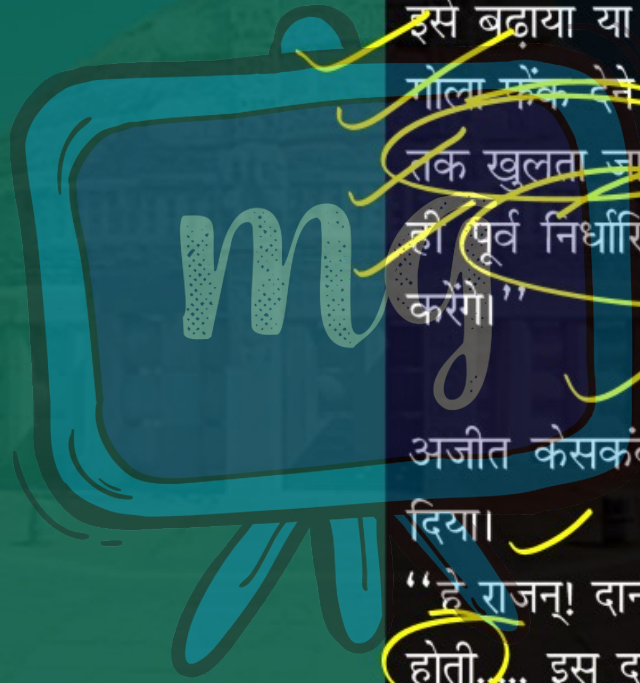

इसे बढ़ाया या घटाया नहीं जा सकता। जैसे धागे का गोला फेंक देने पर लुढ़कते-लुढ़कते अपनी पूरी लंबाई तक खुलता जाता है। उसी तरह मूर्ख और विद्वान दोनों ही पूर्व निर्धारित रास्ते से होते हुए दुखों का निदान करेंगे।"

अजीत केसकंबलिन् नामक दार्शनिक ने यह उपदेश दिया।

"हे राजन्! दान, यज्ञ या चढ़ावा जैसी कोई चीज नहीं होती..... इस दुनिया या दूसरी दुनिया जैसी कोई चीज नहीं होती.....

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

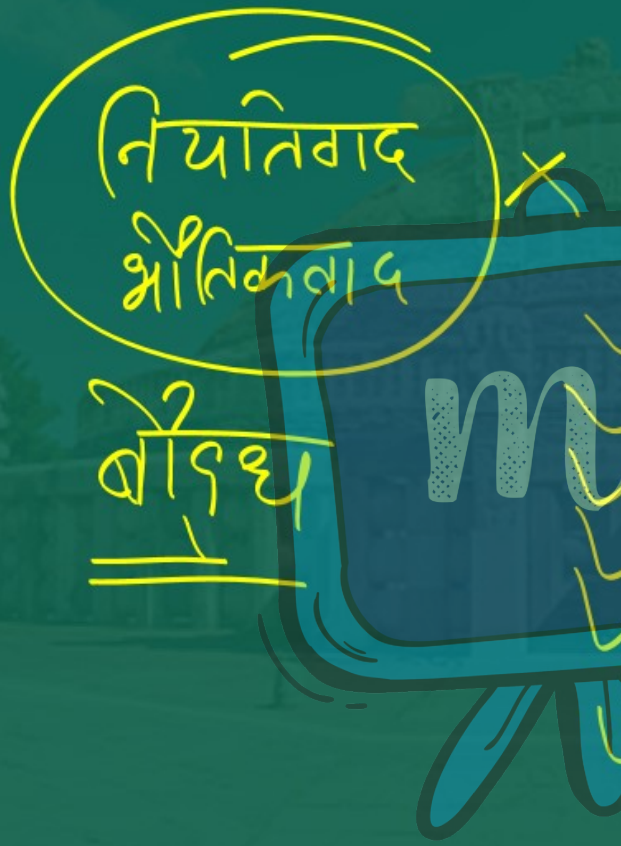

मनुष्य चार तत्वों से बना होता है।
जब वह मरता है तो –
मिट्टी वाला अंश पृथ्वी में,
जल वाला हिस्सा जल में,
गर्मी वाला अंश आग में,
सांस का अंश वायु में वापिस मिल जाता है और
उसकी इन्द्रियां अंतरिक्ष का हिस्सा बन जाती है।
दान देने की बात मूर्खों का सिद्धांत है, खोखला झूठ है..... मूर्ख हो या विद्वान दोनों ही कट कर नष्ट हो जाते हैं। मृत्यु के बाद कोई नहीं बचता।''

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

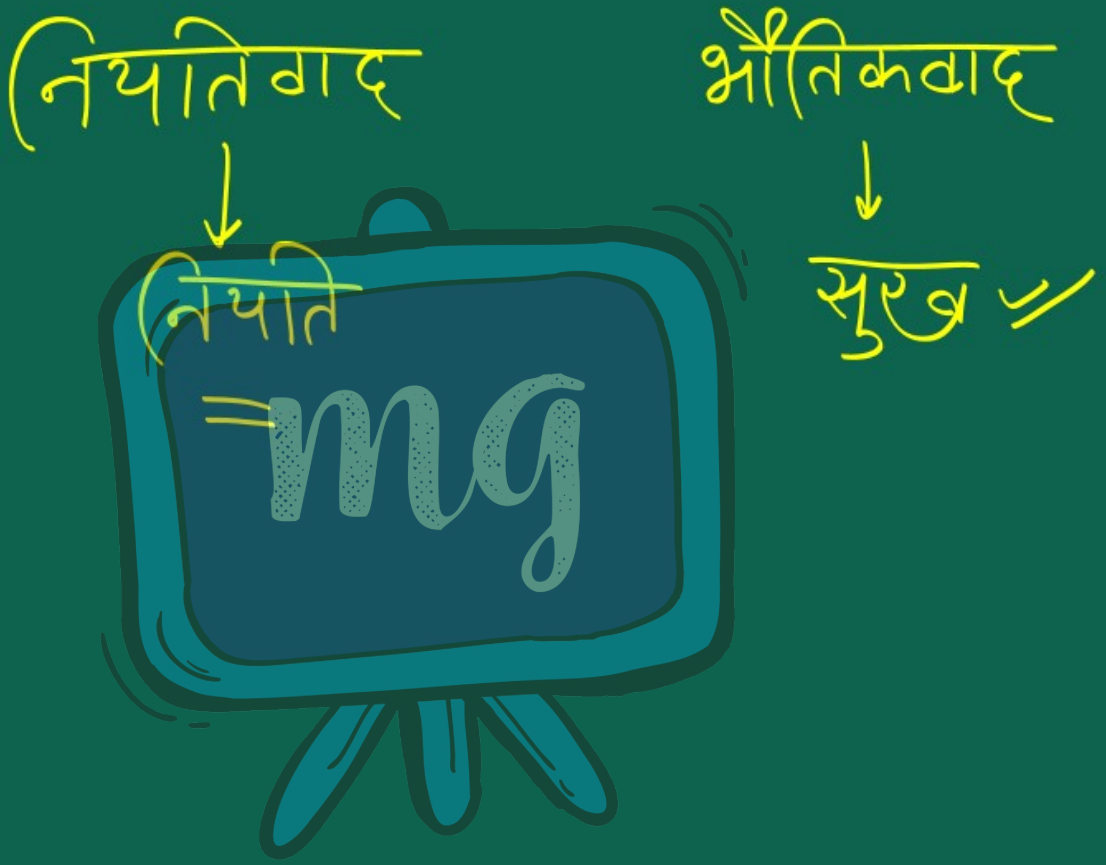

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

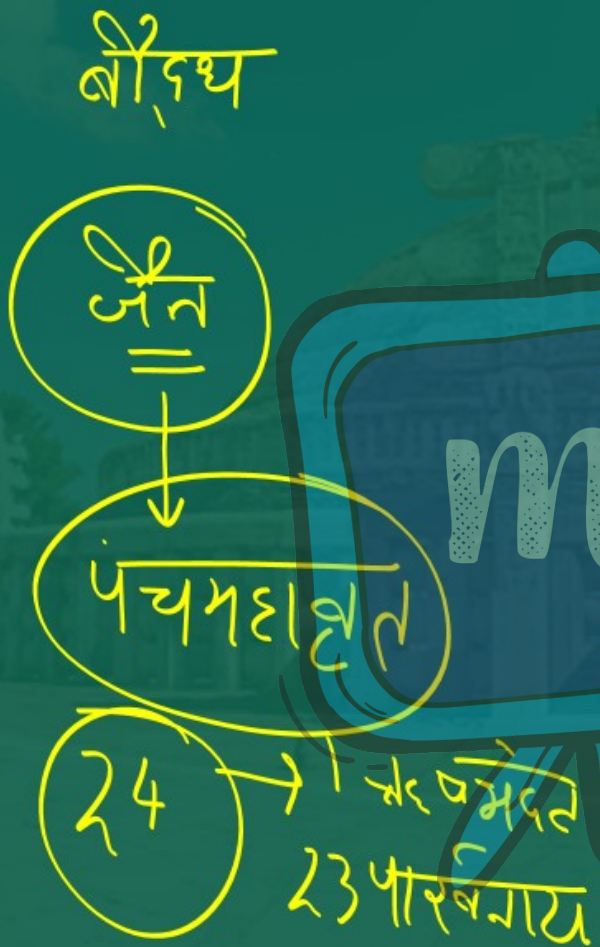

लौकिक सुखों से आगे

महावीर का संदेश –

- महावीर का प्रारम्भिक नाम वर्धमान था।
- इनका जन्म 599 ई.पू. कुंडलग्राम (वैशाली) में हुआ था तथा मृत्यु 527 ई.पू. में पावापुरी (कुशीनगर के पास) हुई।
- पत्नी का नाम यशोदा था।
- 30 वर्ष की आयु में गृह त्याग कर दिया था।
- जैन धर्म के मूल सिद्धान्त 600 ई.पू. में महावीर के जन्म के पहले से ही उत्तर भारत में प्रचलित थे।
- जैन परंपरा के अनुसार महावीर से पहले 23 शिक्षक हो चुके थे जिन्हें तीर्थंकर कहा जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

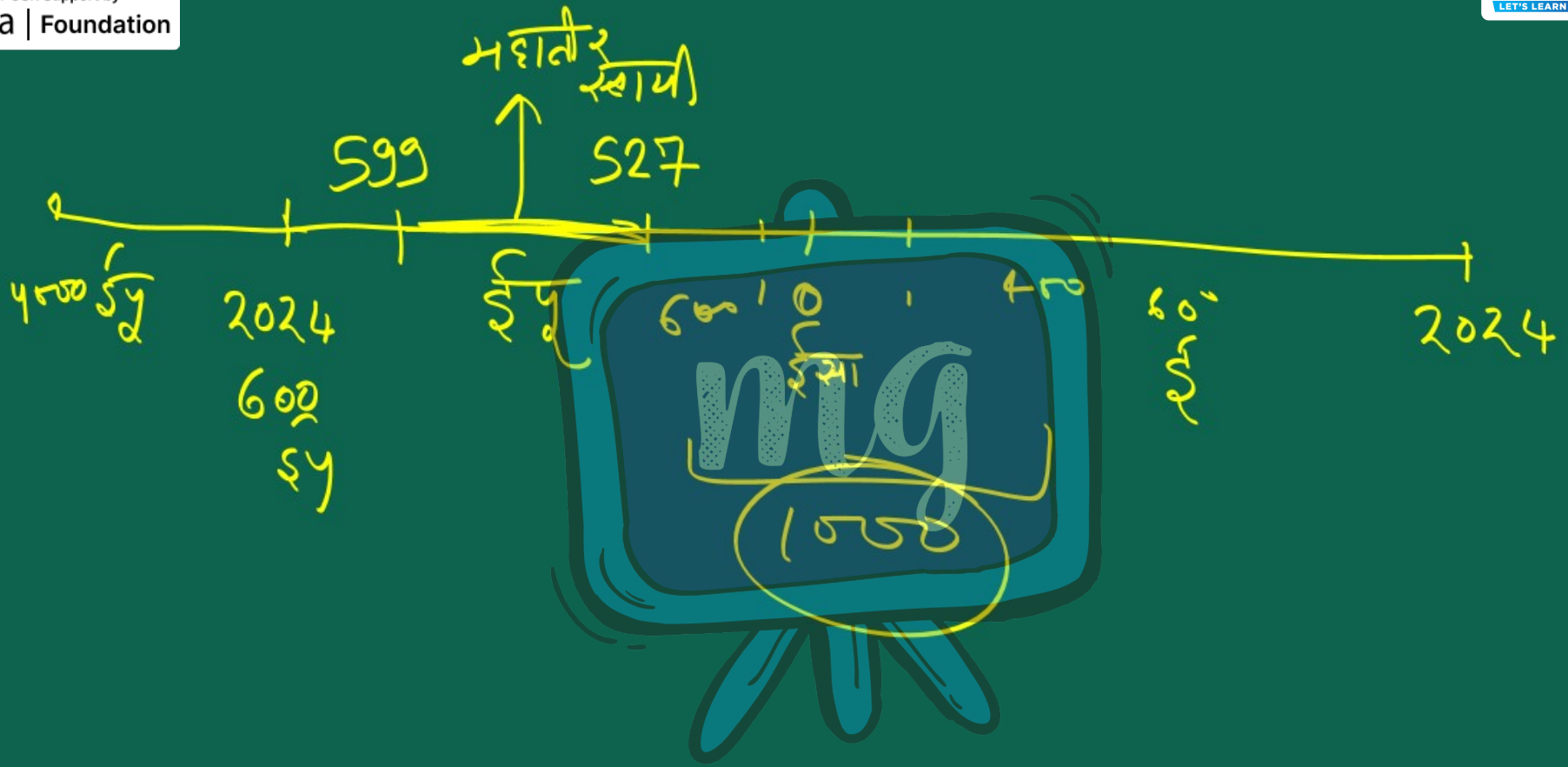

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

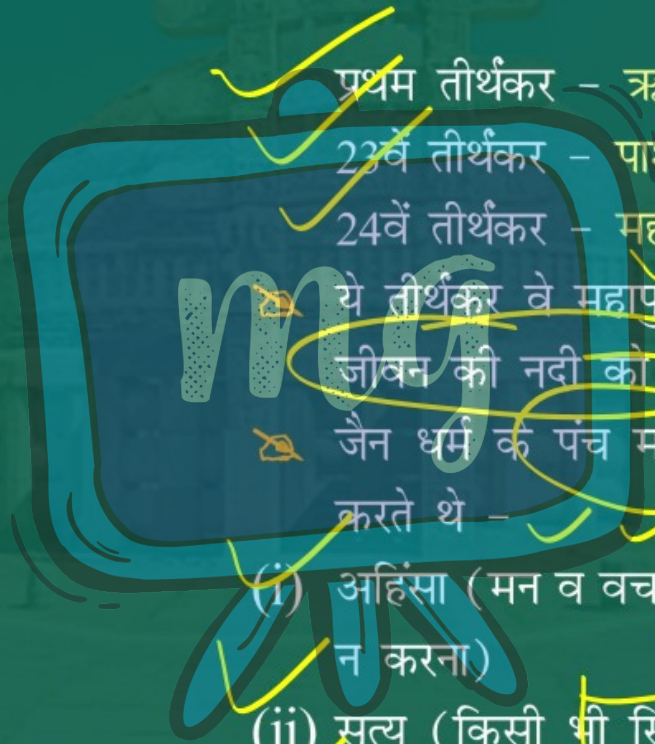

- प्रथम तीर्थंकर – ऋषभदेव
- 23वें तीर्थंकर – पार्श्वनाथ
- 24वें तीर्थंकर – महावीर स्वामी थे।
- ये तीर्थंकर वे महापुरूष थे जो पुरूषों और महिलाओं के जीवन की नदी को पार पहुंचाते थे।
- जैन धर्म के पंच महाव्रत – जैन साधु व साध्वी 5 व्रत करते थे –

(i) अहिंसा (मन व वचन से किसी को दुखी न करना व हत्या न करना)

(ii) सत्य (किसी भी स्थिति में असत्य नहीं बोलना चाहिए)

(iii) अस्तेय (किसी भी वस्तु या विचार की चोरी न करना)

(iv) अपरिग्रह (संग्रह नहीं करना)

(v) ब्रह्मचर्य (परमात्मा में विचरना)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

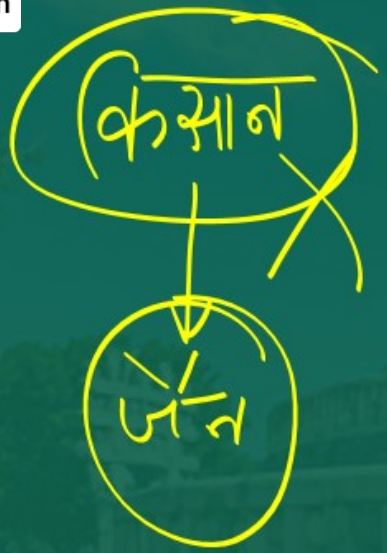



अहिंसा – जैन धर्म की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा यह है कि सम्पूर्ण विश्व प्राणवान है। यह माना जाता है कि पत्थर, चट्टान और जल में भी जीवन होता है। जीवों के प्रति अहिंसा, खासकर इन्सानों, जानवरों, पेड़-पौधों और कीड़े मकोड़ों को न मारना जैन धर्म का केन्द्र बिन्दु है।

- जैन धर्म के अहिंसा के सिद्धांत ने सम्पूर्ण भारतीय-चिंतन परंपरा को प्रभावित किया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

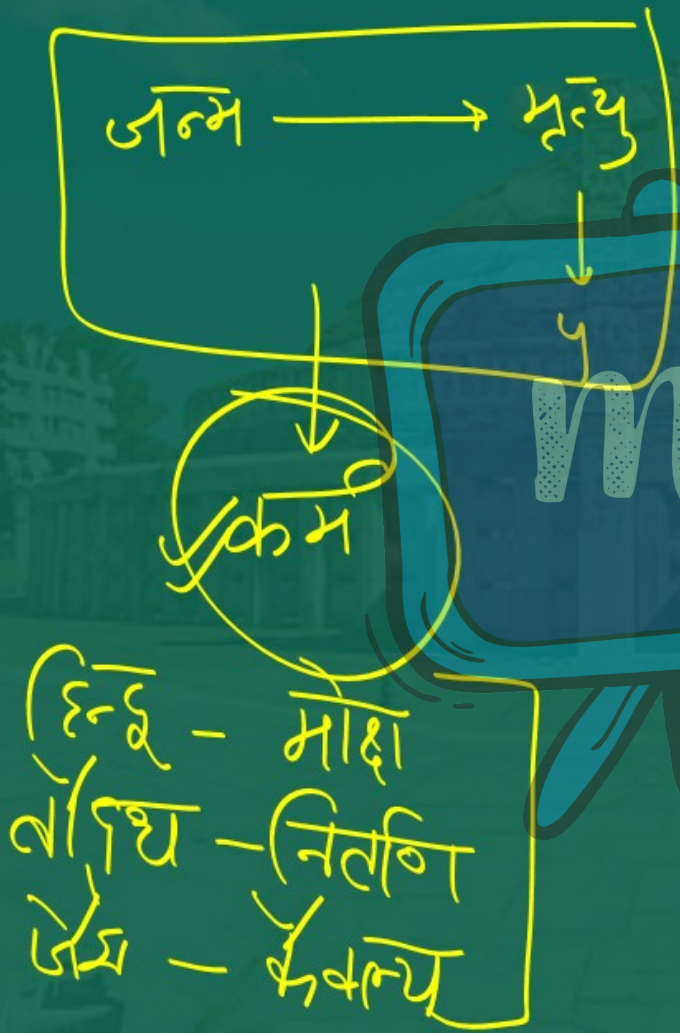

- जैन मान्यता के अनुसार जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के द्वारा निर्धारित होता है।
- कर्म के चक्र से मुक्ति के लिए त्याग और तपस्या की जरूरत होती है। यह संसार के त्याग से ही संभव हो पाता है इसलिए मुक्ति के लिए विहारों में निवास करना एक अनिवार्य नियम बन गया।
- जैन धर्म के कैवल्य (मोक्ष) प्राप्ति का आधार त्रिरत्न है–
  - (i) सम्यक् दर्शन
  - (ii) सम्यक् चरित्र
  - (iii) सम्यक् ज्ञान

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

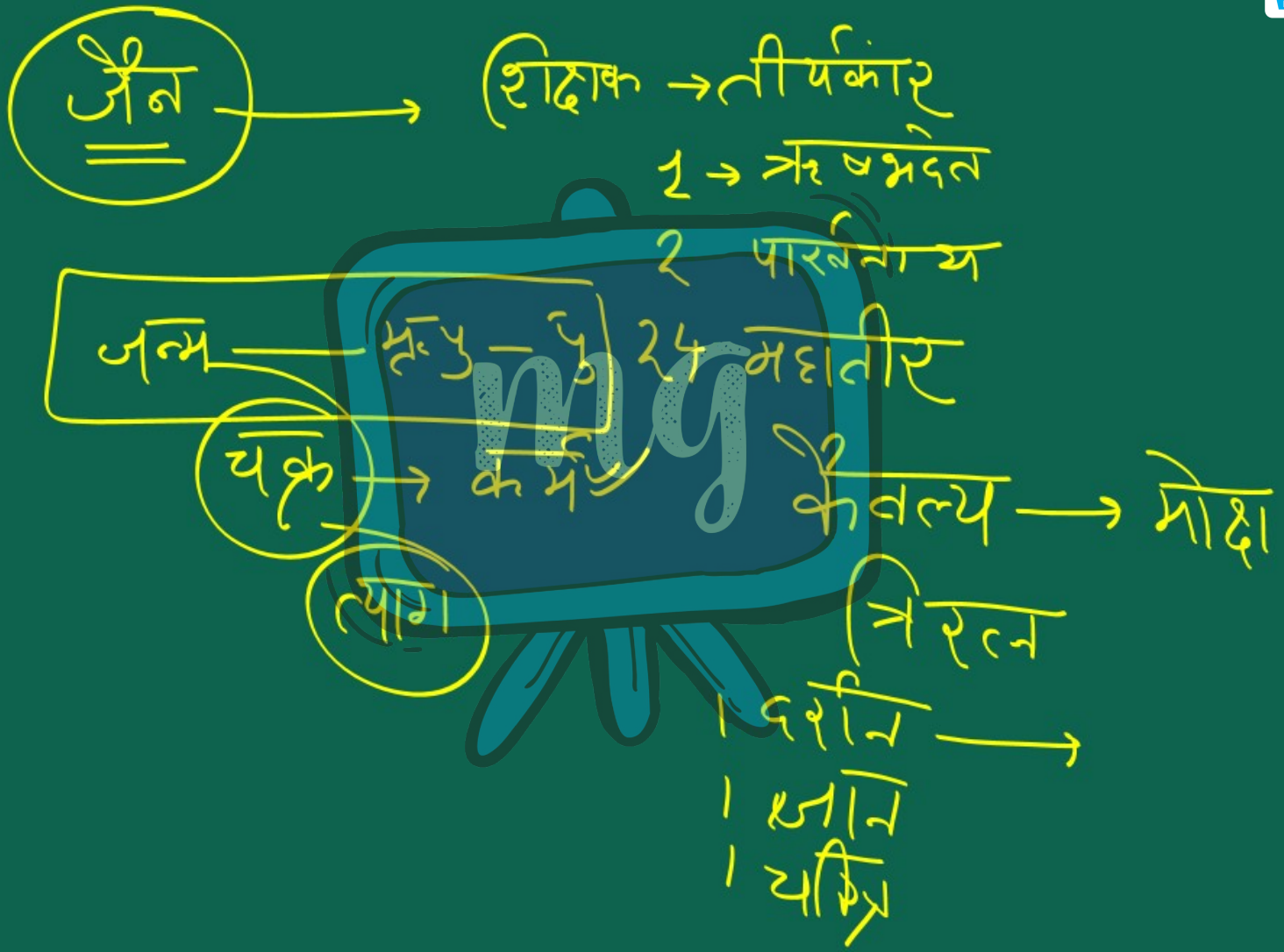

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. प्राचीन भारत (600ई.पू.-600ई.) मे किस प्रकार अलग अलग विचार/दर्शन पैदा करते थे?

Q. बौद्ध ग्रंथो का किस प्रकार संकलित किया गया?

Q. जैन दर्शन को स्पष्ट करे?